प्रश्न - सामाजीकरण के प्रमुख अभिकरण कौन-कौन से है ?

उत्तर - भूमिका - समाज का स्वरूप रचनात्मक होते हुए भी विविध सामाजिक अंगो से युक्त होता है। व्यक्ति अपने शैशव काल से ही अन्त:क्रिया करते हुए आगे बढ़ता है तथा सामाजिकता प्राप्त करता है भिन्न-भिन्न सामाजिक अंगो मे परिवार माता-पिता का पारस्परिक सम्बन्ध आदि सम्मिलित है। व्यक्ति इन संस्थाओ व समूहो से जितना अधिक अनुकूलन कर लेता है सामाजीकरण की प्रक्रिया मे उतनी ही पूर्णता आ जाती है। इस प्रकार उसके कुछ अंग या अभिकरण निम्न है -

(1) परिवार - बालक को समाज के योग्य बनाने मे पहला कार्य परिवार सम्पन्न करता है। परिवार मे बालक को सुरक्षा मिलती है, उसका पालन-पोषण व विकास होता है। अगर परिवार मे माता-पिता भाई-बहन व अन्य रिश्तेदारो का सहयोग बालक के विकास मे सही है तो उसका विकास उचित दिशा मे सुनियोजित रूप से होगा।

(2) पड़ोस - पड़ोस भी एक प्रकार का बड़ा परिवार होता है। जिस प्रकार बालक परिवार के विभिन्न सदस्यो के साथ अन्त:क्रिया द्वारा अपनी संस्कृति एवं सामाजिक गुणों का ज्ञान प्राप्त करता है ठीक उसी प्रकार वह पड़ोस मे रहने वाले विभिन्न सदस्यों एवं बालको के सम्पर्क मे रहते हुए विभिन्न सामाजिक बातो का ज्ञान प्राप्त करता है। यही कारण है कि अच्छे परिवार के लोग अच्छे ही पड़ोस मे रहना पसन्द करते है।

(3) स्कूल - शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। विद्यालय इस प्रक्रिया का औपचारिक अभिकरण है तथा इसका वास्तविक प्रभाव किशोरावस्था मे प्रवेश करने के बाद प्रारम्भ होता है। इस समय बच्चे के मन मे नवीन विचार उत्पन्न होते है

इसी काल में बच्चों में नयी आदतों का निर्माण होता है जो जीवन भर उसके व्यक्तित्व के अंग होते है। परिवार के पश्चात सामाजीकरण का कार्य स्कूल करते है। ये समाज के आदर्शो, मूल्यों तथा मान्यताओं से बालक को परिचित कराते है और बालक से तदानुसार व्यवहार करने को कहते हैं। विद्यालय की प्रतियोगिताओं से बालक जीवन की स्वस्थ प्रतियोगिताओं में भाग लेना सीखता है। विद्यालय में अच्छे शिक्षक व छात्र उसके रोल माडल होते है जो उसके सामाजिकरण में सहायक होते हैं। विद्यालय द्वारा बच्चे में समालोचनात्मक ज्ञान की वृद्धि होती है।

(4) विवाह – इस जीवन (विवाह) को व्यक्ति के नवीन जीवन की संज्ञा दी जाती है। इस जीवन में ही व्यक्ति अपने और पत्नी के बीच नवीन समायोजन स्थापित करता है। विवाह के पूर्व तो पति-पत्नी अलग-अलग विचारों, आदर्शों अलग-अलग रहन सहन का जीवन व्यतीत करते है। लेकिन विवाह के बाद दोनों के विचारों में एकरूपता होना जरूरी होता है। इस तरह की एकरूपता जितनी अधिक होगी सामाजिकरण की प्रक्रिया उतनी ही सफल होती है।

(5) उत्सव – भारत उत्सवों का देश है। यहाँ विभिन्न तरह के धार्मिक उत्सव मनाये जाते है इन त्योहारों में लोग आपसी द्वेष भुलाकर एक दूसरे के गले मिलते है। दशहरे में रावण-दहन के समय हजारों की संख्या में एक जगह एकत्र होते है। 26 जनवरी, 15 अगस्त तथा 2 अक्टूबर में लोग एक जगह एकत्रित होते है तथा इन उत्सवों में भाग लेकर सहयोग, प्रेम, देशभक्ति प्रतिबद्धता आदि गुण सीखते है तथा सामूहिक रूप से खुशी मनाना सीखते है।

(6) धार्मिक संस्कार – इस तरह की संस्कारें व्यक्ति के अन्दर धर्म सम्बन्धी, पवित्रता, सत्यता आदि शील गुणों

का विकास करके व्यक्ति के सामाजीकरण में सहायता करती है। हिन्दू धर्म ऐसा धर्म है जिसने व्यक्ति के समाजीकरण में इतना अधिक योगदान दिया है जितना संसार के किसी भी समाज में देखने को नहीं मिलता है।

(7) समुदाय — स्कूल के साथ बालक के विकास के लिए समुदाय भी उत्तरदायी है। इस उत्तरदायित्व को निबाहे वह खेल के समूह, समुदाय के संगठन आदि के रूप में करता है। समुदाय में साहित्य, संगीत कला, संस्कृति प्रभाव, परम्पराएं आदि के सहयोग से सामाजिकता का निर्माण होता है।

(8) जाति — हर बालक किसी न किसी जाति का सदस्य होता है हर जाति का अपना इतिहास होता है और उसी के अनुसार बालक में जातिगत विशेषताओं से विशिष्ट व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

(9) आयु समूह — बालक प्रायः परिवार के बाहर अपनी आयु के अन्य बच्चों के साथ खेलना प्रारम्भ कर देता है। खेल खेल में वह अनेक बातों, विभिन्न व्यवहार के ढंग, रुचि, अनुकूलनशीलता, रीति-रिवाज आदि सरलता से सीख लेता है।

(10) सामाजिक समूह — समाज में सामाजिक स्थिति अर्जित करने के लिए भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विभिन्न सामाजिक समूह व्यक्ति को मार्ग दर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए — जाति, वर्ग एवं प्रजाति आदि ऐसे सामाजिक समूह हैं जो व्यक्ति को प्रारम्भिक जीवन से ही यह बोध कराने लगते हैं कि वह किन व्यक्ति से सामाजिक सम्बन्ध रखे तथा किन से नहीं। सामाजीकरण की प्रक्रिया में इन समूहों की भूमिका एवं प्रभाव को इसी तथ्य से समझा जा सकता है कि एक व्यक्ति अपने परिवार, पड़ोस एवं विद्यालय से किस प्रकार अनुकूलन करता है।

Gender, School, and Society

SUSHIL

Experiment No. ....

Page No. 1

B.Ed. 2nd

Date

प्रश्न - मूल्य की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताएं बताओ।

उत्तर - मूल्य - आज के युग में शिक्षा दिन-प्रतिदिन भौतिकवादी होती जा रही है। प्राचीन मूल्यों व परम्पराएं समाप्त होती जा रही हैं। आज इस शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है कि छात्रों का विकास हो सके। यह हमारी शिक्षा प्रक्रिया को एक पक्षीय बना देती है। जिसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति का सन्तुलित विकास नहीं हो पाता। भारतीय परम्परा के महान मूल्यों जैसे नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को भुलाया जा रहा है।

मूल्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ - मूल्य सहित जीवन ही अर्थपूर्ण है, मूल्यरहित जीवन कुछ भी नहीं। जो मनुष्य मूल्यों को महत्व देता है वो समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐसा व्यक्ति समय को महत्व देता है वह प्रत्येक पल का भरपूर आनन्द लेता है एवं उसका भरपूर उपयोग करता है अतः प्रत्येक वस्तु जिसका महत्व होता है उसे हम मूल्य कहते हैं। Value शब्द का उद्गम Valure से हुआ जो लैटिन भाषा का शब्द है, जिसका तात्पर्य महत्व, उपयोगिता अथवा वांछनीयता से लगाया जाता है। मूल्य समाज में विभिन्न आदर्शों, प्रतिमानों के रूप में समाज को उचित दिशा निर्देशन प्रदान करते हैं।

SUSHIL

Page No. 3

Experiment No. .... Date ....

आदर्श व्यवहारिक प्रतिमानों, नैतिक नियमों, सिद्धान्तों आदि को सम्मिलित एवं स्वीकृत किया जाता है।

4) मूल्यों का विकास – समाज में व्यक्ति विभिन्न क्रियाओं धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनैतिक आदि में सक्रिय रूप से सम्मिलित होता है इस सम्मिलित सहभागिता से मूल्यों का विकास होता है।

5. मूल्यों का चयन – मूल्यों का चयन प्रायः व्यक्ति की रूचि पर आधारित है क्योंकी व्यक्ति उन्हीं मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं जो उनकी पसन्द एवं समाज में प्रचलित है। जैसे - आदर्श, सिद्धान्त, नैतिक नियम एवं व्यवहार मानदण्ड।

6. उचित कार्य प्रेरक – समाज में प्रचलित मूल्य व्यक्ति को उचित कार्य करने के प्रेरक होते हैं मूल्य व्यक्ति को उचित - अनुचित तथा सही गलत कार्य निर्धारण में सहायक होते हैं।

7. मूल्य प्रत्यय – मूल्यों का प्रथम चरण संज्ञानात्मक दूसरा भावात्मक और तीसरा क्रियात्मक चरण है। मनुष्य में मूल्यों का निर्माण तब शुरू होता है जब उसमें विवेक संज्ञान उत्पन्न होता है और वह इनके उद्देश्यों के बारे में सोचने लगता है। समाज के जिन मूल्यों से व्यक्ति प्रभावित होता है, वे उसकी भावना से जुड़ जाते हैं।

8. समाज की पहचान – किसी समाज, राष्ट्र एवं व्यक्ति की पहचान उसके मूल्यों द्वारा होती है।

ऑगबर्न के अनुसार, "मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करे।"

जे.के. आर. फ्रैंकलिन के अनुसार "मूल्य आचार, सौन्दर्य, कुशलता या महत्व के वे मानदण्ड हैं, जिनको लोग समर्थन करते हैं जिनके साथ वे जीते हैं तथा जिन्हें वे कायम रखते हैं।"

मूल्यों की प्रकृति एवं विशेषताएँ — मूल्य प्रत्येक समाज के प्रतीक होते हैं और प्रत्येक समाज अपने मूल्यों की रक्षा करना चाहता है। समाज में मूल्यों के विस्तृत वर्णन के पश्चात इनकी प्रमुख विशेषताएं एवं प्रकृति इस प्रकार वर्णित हैं —

1 अमूर्त सम्प्रत्यय — समाज में प्रचलित मूल्यों की प्रकृति अमूर्त होती है। मूल्यों का सम्बन्ध मनुष्य की आन्तरिक शक्ति, मन से होता है जो कि अमूर्त रूप में समाज में स्थापित रहते हैं।

2. दीर्घ अनुभवों का परिणाम — किसी भी समाज में स्थापित मूल्यों अल्प समय में विकसित नहीं होते वरन् उनके निर्माण में दीर्घ अनुभवों की आवश्यकता होती है दीर्घ अनुभवों के परिणामस्वरूप समाज में विभिन्न सिद्धान्त ~~विश्व~~ विश्वास, आदर्श नैतिक प्रतिमान और व्यावहारिक मानदण्डों का स्थापन होता है। मूल्यों का विकास इसी आधार पर होता है।

3. सामाजिक स्वीकृति — मूल्य प्रायः किसी समाज में उपस्थित विभिन्न प्रतिमान हैं जिसके अन्तर्गत सामाजिक

Gender

SUSHIL

Page No. 1

Experiment No. .....

Date Unit-3rd

प्रश्न - परिवर्तन क्या है? परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - परिवर्तन -

परिवर्तन प्रकृति का नियम है क्योंकी यदि परिवर्तन नहीं होगा तो जीवन एवं सृष्टि की गति अवरुद्ध हो जाएगी। परिवर्तन व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक इत्यादि सभी क्षेत्रों में होता है, जिसके परिणाम स्वरूप नवीन व्यवस्था जन्म लेती है। परिवर्तन का सामान्य तात्पर्य है, किसी क्रिया या वस्तु की पहले की स्थिति में बदलाव आ जाना। परिवर्तन को स्पष्ट करते हुए फिशर लिखते हैं, संक्षेप में परिवर्तन पहले की अवस्था या अस्तित्व के प्रकार में अन्तर को कहते हैं।"

परिवर्तन का सम्बन्ध प्रमुख तीन रूप से तीन बातों से होता है - वस्तु, समय, भिन्नता।

1. वस्तु - परिवर्तन का सम्बन्ध किसी न किसी विषय या वस्तु से होता है। जब हम यह कहते हैं कि परिवर्तन आ रहा है तब हमें यह स्पष्ट करना होता है कि परिवर्तन किस वस्तु या विषय में आ रहा है बगैर वस्तु को बताए हम परिवर्तन का अध्ययन नहीं कर सकते हैं।

2. समय - परिवर्तन का समय से घनिष्ट सम्बन्ध होता है परिवर्तन को प्रकट करने के लिए हमारे पास कम से कम दो समय होने चाहिए।

एक ही समय में परिवर्तन की चर्चा नहीं की जा सकती उदाहरण के लिए – यदि हम कह सकते हैं कि वैदिक काल की तुलना में वर्तमान समय में भारत बहुत परिवर्तित हो गया है। समय के सन्दर्भ में ही परिवर्तन ज्ञात होता है। समय की अवधारणा को सम्मिलित किए बगैर किसी भी परिवर्तन के विषय में सोचा नहीं जा सकता है।

3. भिन्नता – विभिन्न समयों में यदि किसी वस्तु में भिन्नता नहीं आए तो परिवर्तन नहीं कहलाएगा। वस्तु के स्वरूप में यदि समय के साथ अन्तर न आए तो हम यही कहेंगे कि परिवर्तन नहीं हुआ है अतः वस्तु के रंग-रूप, आकार-प्रकार, संरचना, कार्य या अन्य पक्षों में भिन्नता प्रकट होने पर ही हम परिवर्तन का अध्ययन कर सकते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी वस्तु में दो समय में दिखाई देने वाली भिन्नता ही परिवर्तन है। परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो सभी काल एवं स्थानों में घटित होती रहती है। परिवर्तन के कारण किसी वस्तु के समूल ढांचे में परिवर्तन आ सकता है या जानबूझकर योजनाबद्ध रूप से भी लाया जा सकता है।

SUSHIL

Experiment No. ....

Page No. 3

Date ....

परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका —

1. लैंगिक निरपेक्ष भाषा का विकास

2. दोनो ही लिंग से सम्बन्धित उदाहरण देना चाहिए।

3. अलग-अलग बैठने की व्यवस्था करने की बजाय एक साथ बैठने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

4 कक्षागत गतिविधियों में समान भागीदारी सुनिश्चित करना

5 छात्र गतिविधि का अवलोकन

6 योग्यता एवं रूचि के अनुसार उत्तरदायित्व प्रदान करना।

7 अध्यापक की सकारात्मक सोच।

8. अभिभावकों को उचित परामर्श।

9 अध्यापक का दर्शन।

10 अध्यापक छात्र के सर्वोत्तम सम्बन्ध।

1 लैंगिक निरपेक्ष भाषा का विकास — प्राय: पुरुष शिक्षक अपनी अनुक्रिया के दौरान स्त्रीलिंग से सम्बन्धित शब्दों या वाक्यों का प्रयोग करते हैं इसके बजाय दोनो लिंगों से सम्बन्धित शब्दों का समान रूप से प्रयोग करने की आदत का विकास करना चाहिए।

2- दोनो ही लिंग से सम्बन्धित उदाहरण देना चाहिए — शिक्षकों को लैंगिक समानता स्थापित करने के उद्देश्य से समान रूप से दोनों लिंगों से सम्बन्धित उदाहरणों का प्रयोग करना चाहिए। उन पुरुष भूमिकाओं को बदलकर महिलाओं को भूमिका दी जानी चाहिए जो लैंगिक असमानता को समाप्त करने में मददगार साबित हो सकते हैं।

3. अलग-अलग बैठने की व्यवस्था करने की बजाय एक साथ बैठने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए - हमारे समाज में लड़के-लड़कियों को शुरू से ही अलग-अलग बिठाने की व्यवस्था की जाती है जिस कारण इन दोनों लिंगों में काफी गहरा अन्तराल पैदा हो जाता है और अलग-अलग ही रहते हैं तथा काम करते हैं एक साथ बैठने से वे एक दूसरे की सोच को प्रभावित कर सकेंगे जो लैंगिक समानता की तरफ अग्रसर होने में मदद कर सकेगा।

4. कक्षागत गतिविधियों में समान भागीदारी सुनिश्चित करना - कक्षागत परिस्थितियों में कई प्रकार की प्रतियोगिता और क्रियाविधियों का आयोजन किया जाता है। इन सभी में लड़के और लड़कियों को समान रूप से भाग लेने का अवसर देना चाहिए।

5. छात्र गतिविधियों का अवलोकन - अध्यापक को बालक तथा बालिकाओं की विद्यालयी गतिविधियों का अवलोकन करना चाहिए। अध्यापक को जहाँ पर भी लैंगिक असमानता की स्थिति अनुभव हो तो उसे समाप्त करना चाहिए।

6. योग्यता एवं रुचि के अनुसार उत्तरदायित्व प्रदान करना - अध्यापक द्वारा बालक एवं बालिकाओं को उत्तरदायित्व प्रदान करते समय यह नहीं देखना चाहिए कि यह बालक है इसलिए इसको अलग उत्तरदायित्व प्रदान करते समय बालक - बालिका की रुचि व योग्यता देखनी चाहिए।

Experiment No. ....

Date ....

7 अध्यापक की सकारात्मक सोच – एक सकारात्मक सोच वाला अध्यापक ही अपने बालकों में सकारात्मक सोच विकसित कर सकता है। यदि एक अध्यापक अपने छात्र – छात्राओं को अपने के समान समझता है तो उसी रूप में प्रेम करता है तो इससे बालकों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

8. अभिभावकों को उचित परामर्श – शिक्षक- अभिभावक एवं तथा विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक में अध्यापक एवं अभिभावकों का सम्पर्क होता है। इन स्थितियों में विद्यालयी लैंगिक समानता पर चर्चा करते समय परिवार तथा समाज में भी लैंगिक समानता विकसित करने पर चर्चा की जाए तो विद्यालय तथा समाज दोनों ही लैंगिक समानता का वातावरण विकसित हो सकेगा।

9. अध्यापक का दर्शन – यदि अध्यापक का चिन्तन तथा दर्शन समानता का पक्षधर है तो उसके प्रत्येक प्रयास भी इसी से सम्बन्धित होंगे। उसके द्वारा बालक एवं बालिकाओं में विद्यालयी स्तर या सामाजिक स्तर पर कोई विभेद नहीं किया जाएगा।

10. अध्यापक-छात्र के सर्वोत्तम सम्बन्ध – अध्यापक तथा छात्रा के मध्य सम्बन्ध मधुर होने चाहिए अतः छात्रों के द्वारा अध्यापक के प्रत्येक तथ्य को सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए। इस स्थिति में अध्यापक द्वारा लैंगिक असमानता दूर करने सम्बन्धी प्रयासों को छात्रों द्वारा सहज स्वीकार किया जाएगा।